SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

विष्णु पुराण का आध्यात्मिक व सांस्कृतिक अध्ययन – 1

डॉ आशाराम सगर *
शोध निदेशक, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग
शासकीय महाविद्यालय गोहद भिण्ड मध्यप्रदेश

डॉ मनीष खेमरिया
सह शोध निदेशक विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग
महारानी लक्ष्मीबाई उत्कृष्ट महाविद्यालय ग्वालियर मध्यप्रदेश

बृजेश कुमार
शोधार्थी संस्कृत

Published: 23/05/2024 *Corresponding Author

सार
महापुराणों में श्विष्णु पुराणश का आकार सबसे छोटा है। किन्तु इसका महत्त्व प्राचीन समय से ही बहुत अधिक माना गया है। संस्कृत विद्वानों की दृष्टि में इसकी भाषा ऊंचे दर्जे की, साहित्यिक, काव्यमय गुणों से सम्पन्न और प्रसादमयी मानी गई है। इस पुराण में भूमण्डल का स्वरूप, ज्योतिष, राजवंशों का इतिहास, कृष्ण चरित्र आदि विषयों को बड़े तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। खण्डन–मण्डन की प्रवृत्ति से यह पुराण मुक्त है। धार्मिक तत्त्वों का सरल और सुबोध शैली में वर्णन किया गया है। हिंदू भगवान विष्णु ष्सही कायष् का प्रतीक हैं। जागते रहना ब्रह्मांड की रक्षा करता है। जब वे जागते हैं तो सृष्टि एक बीज को उगने के लिए निकालती है। विष्णु अक्सर सांसारिक रूपों में दुनिया की रक्षा करते हैं।ए मत्स्य, वह मछली जिसने पहले मनुष्य को महान बाढ़ से बचायायए कूर्म, एक कछुआ जो ब्रह्मांड का समर्थन करता है और दूध के डिब्बे में पवित्र अमृत पाता हैयए एक मानव शरीर वाला सूअर जो पृथ्वी देवी को धारण करता हैयए एक मानव–सिंह जो अपने पंजों से राक्षस राजा पर हमला करता हैयए एक बौना जो पृथ्वी, आकाश और नरक को लेता है और देवताओं की मदद करता है। राम और कृष्ण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कुछ लोग राम को सत्य का देवता कहते हैं। गरुड़, एक शक्तिशाली मानव–पक्षी और सूर्य, उनकी सवारी है। अपने नौ अवतारों में, विष्णु मछली, कछुआ, सूअर, मानव–सिंह, बौना, परशुराम, राम, कृष्ण और बुद्ध थे। धर्म को बचाने के लिए विष्णु कभी भी पृथ्वी पर प्रकट हो सकते हैं।

मुख्यशब्द रू– सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, विष्णु पुराण

परिचय
विष्णुपुराण अट्ठारह पुराणों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा प्राचीन है। यह श्री पराशर ऋषि द्वारा प्रणीत है। इसके प्रतिपाद्य भगवान विष्णु हैं, जो सृष्टि के आदिकारण, नित्य, अक्षय, अव्यय तथा एकरस हैं। इस पुराण में आकाश आदि भूतों का परिमाण, समुद्र, सूर्य आदि का परिमाण, पर्वत, देवतादि की उत्पत्ति, मन्वन्तर, कल्प–विभाग, सम्पूर्ण धर्म एवं देवर्षि तथा राजर्षियों के चरित्र का विशद वर्णन है। भगवान विष्णु प्रधान होने के बाद भी यह पुराण विष्णु और शिव के अभिन्नता का प्रतिपादक है। विष्णु पुराण में मुख्य रूप से श्रीकृष्ण चरित्र का वर्णन है, यद्यपि संक्षेप में राम कथा का उल्लेख भी प्राप्त होता है।
अष्टादश महापुराणों में श्री विष्णुपुराण का स्थान बहुत ऊँचा है। इसमें अन्य विषयों के साथ भूगोल, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, राजवंश और श्रीकृष्ण–चरित्र आदि कई प्रंसगों का बड़ा ही अनूठा और विशद वर्णन किया गया है। श्री विष्णु पुराण में भी इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी की सर्वव्यापकता, ध्रुव प्रह्लाद, वेनु, आदि राजाओं के वर्णन एवं उनकी जीवन

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

गाथा, विकास की परम्परा, कृषि गोरक्षा आदि कार्यों का संचालन, भारत आदि नौ खण्ड मेदिनी, सप्त सागरों के वर्णन, अद्यः एवं अर्द्ध लोकों का वर्णन, चौदह विद्याओं, वैवस्वत मनु, इक्ष्वाकु, कश्यप, पुरुवंश, कुरुवंश, यदुवंश के वर्णन, कल्पान्त के महाप्रलय का वर्णन आदि विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है। भक्ति और ज्ञान की प्रशान्त धारा तो इसमें सर्वत्र ही प्रच्छन्न रूप से बह रही है।

यद्यपि यह पुराण विष्णुपरक है तो भी भगवान शंकर के लिये इसमे कहीं भी अनुदार भाव प्रकट नहीं किया गया। सम्पूर्ण ग्रन्थ में शिवजी का प्रसंग सम्भवतः श्रीकृष्ण–बाणासुर–संग्राम में ही आता है, वहाँ स्वयं भगवान कृष्ण महादेवजी के साथ अपनी अभिन्नता प्रकट करते हुए श्रीमुखसे कहते हैं–

त्वया यदभयं दत्तं तद्दत्तमखिलं मया। मत्तोऽविभिन्नमात्मानं द्रष्टुमर्हसि शंकर।
योऽहं स त्वं जगच्चेदं सदेवासुरमानुषम्। मत्तो नान्यदशेषं यत्तत्त्वं ज्ञातुमिहार्हसि।

अविद्यामोहितात्मानः पुरुषा भिन्नदर्शिनः। वन्दति भेदं पश्यन्ति चावयोरन्तरं हर॥

उद्देश्य

1. विष्णु पुराण का आध्यात्मिक व सांस्कृतिक का अध्ययन
2. सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन

यह 18 पुराणों में से सबसे प्रामाणिक पुराणों में से एक है। इसमें 23000 श्लोक हैं जो छह अंशों और 126 अध्यायों में विभाजित हैं। पहला अंश ब्रह्मांड की रचना के बारे में है। दूसरा अंश दुनिया का विस्तृत भौगोलिक चित्र प्रस्तुत करता है। तीसरा अंश वर्ण धर्म और आश्रम धर्म के विस्तार के लिए है। चौथा अंश विशेष रूप से चंद्र वंश के राजाओं की कहानियों की व्याख्या करता है। पाँचवें अंश में श्री कृष्ण की कथा वर्णित है जो श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध से काफी मेल खाती है। छठा अंश ब्रह्मांड के विलय की बहुत ही व्यवस्थित प्रक्रिया के बारे में है।

अंश ूू सृजन की प्रक्रिया

ऋषि मैत्रेय और पराशर के बीच संवाद, ब्रह्मा का जीवन काल, कल्पान्त सृष्टि, सृष्टि के पहलू, देवता, ऋषि आदि, मानव की रचना, भृगु, ध्रुव, पृथु, प्रह्लाद की कहानियाँ, हिरण्यकश्यप का वध, विष्णु की विभिन्न विभूतियाँ वर्णित हैं।

विष्णु पुराण का पहला अंश (भाग) ब्रह्माण्ड विज्ञान प्रस्तुत करता है, जो ब्रह्मांड के निर्माण, रखरखाव और विनाश से संबंधित है। रोचर कहते हैं कि पौराणिक कथाओं को हिंदू दर्शन के सांख्य स्कूल के विकासवादी सिद्धांतों के साथ बुना गया है।

हिंदू भगवान विष्णु को इस पाठ के ब्रह्माण्ड विज्ञान के केंद्रीय तत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि कुछ अन्य पुराणों में शिव या ब्रह्मा या देवी शक्ति हैं। पहले भाग के 22 अध्यायों में विष्णु की श्रद्धा और पूजा को मुक्ति के साधन के रूप में वर्णित किया गया है, साथ ही विष्णु के समानार्थी नामों जैसे हरि, जनार्दन, माधव, अच्युत, हृषिकेश और अन्य का प्रचुर उपयोग किया गया है। विष्णु पुराण के अध्याय 1-16 से 1-20 तक दयालु और विष्णु भक्त प्रह्लाद की कथा और उनके राक्षस राजा पिता हिरण्यकश्यप द्वारा उनके उत्पीड़न की कथा प्रस्तुत की गई है, जिसमें प्रह्लाद को अंततः विष्णु द्वारा बचाया जाता है। यह कहानी अन्य पुराणों में भी पाई जाती है।

विष्णु पुराण की पहली पुस्तक में विष्णु का वर्णन इस प्रकार किया गया है, विल्सन का अनुवाद, सभी तत्व, दुनिया के सभी पदार्थ, संपूर्ण ब्रह्मांड, सभी जीवित प्राणी, साथ ही प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर आत्मा, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, मन, इंद्रियां, अज्ञान, ज्ञान, चार वेद, वह सब जो है और जो नहीं है

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

अंश 2: पृथ्वी दृ धरती

पाठ का दूसरा भाग पृथ्वी, सात महाद्वीपों और सात महासागरों के सिद्धांत का वर्णन करता है। इसमें मेरु पर्वत, मंदार पर्वत और अन्य प्रमुख पर्वतों के साथ–साथ भारत–वर्ष (शाब्दिक रूप से, भारत का देश) के साथ–साथ इसकी कई नदियों और विविध लोगों का वर्णन किया गया है। सात महाद्वीपों का नाम जम्बू, प्लक्ष, शाल्मला, कुश, क्रौंच, शक और पुष्कर है, जिनमें से प्रत्येक अलग–अलग प्रकार के तरल पदार्थों (खारे पानी, ताजे पानी, शराब, गन्ने का रस, घी, तरल दही और दूध) से घिरा हुआ है।

विष्णु पुराण के इस भाग में पृथ्वी, ग्रहों, सूर्य और चंद्रमा के ऊपर के क्षेत्रों का वर्णन किया गया है। ग्रंथ की दूसरी पुस्तक के चार अध्याय (2-13 से 2-16) राजा भरत की किंवदंतियों को प्रस्तुत करते हैं, जो एक संन्यासी का जीवन जीने के लिए अपना सिंहासन त्याग देते हैं, जो भागवत पुराण के खंड 5-7 से 5-14 में पाई जाने वाली किंवदंतियों के समान है। स्टेला क्राम्रिच ने कहा कि इस पुस्तक और अन्य पुराणों में प्रस्तुत मेरु पर्वत के पूर्व में मंदरा पर्वत की भूगोल, मंदिर (हिंदू मंदिर) शब्द और इसके डिजाइन, ष्छवि, उद्देश्य और गंतव्यष् के कारण से संबंधित हो सकती है।

अंश 3: काल दृ समय

मन्वन्तरों की गणना, 28 वेद व्यास, कल्प परिमाण, त्रिपुरों के विनाश के लिए बुद्ध का अवतार यहाँ वर्णित है।

विष्णु पुराण की तीसरी पुस्तक के प्रारंभिक अध्याय मन्वन्तरों, या मनु–युगों (प्रत्येक लगभग 4-3 मिलियन वर्ष के बराबर है) के अपने सिद्धांत को प्रस्तुत करते हैं। यह हिंदू विश्वास पर आधारित है कि सब कुछ चक्रीय है, और यहाँ तक कि युग (युग, युग) भी शुरू होते हैं, परिपक्व होते हैं और फिर विलीन हो जाते हैं। पाठ में कहा गया है कि छह मन्वन्तर पहले ही बीत चुके हैं, और वर्तमान युग सातवें से संबंधित है। प्रत्येक युग में, पाठ में कहा गया है, वेदों को चार में व्यवस्थित किया जाता है, इसे चुनौती दी जाती है, और ऐसा पहले ही अट्ठाईस बार हो चुका है। हर बार, एक वेद–व्यास प्रकट होते हैं और वे अपने छात्रों की सहायता से शाश्वत ज्ञान को परिश्रमपूर्वक व्यवस्थित करते हैं। वैदिक विद्यालयों के उद्भव को प्रस्तुत करने के बाद, पाठ अध्याय 2-8 में चार वर्णों के नैतिक कर्तव्यों, अध्याय 2-9 में प्रत्येक मनुष्य के जीवन के चार आश्रम (चरण), अध्याय 2-10 से 2-12 में विवाह संस्कार सहित संस्कार और अध्याय 2-13 से 2-16 में श्राद्ध (पूर्वजों के सम्मान में अनुष्ठान, विश्वास) प्रस्तुत करता है।

विष्णु पुराण में कहा गया है कि ब्राह्मण को शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए, देवताओं की पूजा करनी चाहिए और दूसरों के लिए तर्पण करना चाहिए, क्षत्रिय को हथियार रखना चाहिए और पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए, वैश्य को वाणिज्य और खेती करनी चाहिए, जबकि शूद्र को व्यापार के मुनाफे से, अन्य वर्णों की सेवा और यांत्रिक श्रम के माध्यम से निर्वाह करना चाहिए। पाठ में कहा गया है कि सभी वर्णों के नैतिक कर्तव्य दूसरों का भला करना, कभी किसी को गाली नहीं देना, कभी भी निंदा या असत्य में शामिल नहीं होना, कभी किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी की लालसा नहीं करना, कभी किसी दूसरे की संपत्ति नहीं चुराना, कभी किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखना, कभी किसी मनुष्य या जीवित प्राणी को नहीं मारना या मारना। पुराण में कहा गया है कि देवताओं, ऋषियों और गुरु की सेवा में तत्पर रहो, सभी प्राणियों, अपनी संतानों और अपनी आत्मा का कल्याण चाहो। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ण या जीवन की अवस्था का हो, जो उपरोक्त कर्तव्यों के अनुसार जीवन जीता है, वह भगवान विष्णु का सर्वश्रेष्ठ उपासक

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

है, ऐसा विष्णु पुराण में कहा गया है। मनुष्य के नैतिक कर्तव्यों पर इसी तरह के कथन विष्णु पुराण के अन्य भागों में भी मिलते हैं।

पाठ में अध्याय 2-9 में जीवन के चार चरणों का वर्णन किया गया है, जैसे ब्रह्मचर्य (छात्र), गृहस्थ (गृहस्थ), वानप्रस्थ (सेवानिवृत्ति) और संन्यास (त्याग, भिक्षुक)। विल्सन का अनुवाद है कि पाठ में इस अध्याय में नैतिक कर्तव्यों को दोहराया गया है। श्राद्ध (पूर्वजों के लिए संस्कार) पर अध्याय परिवार में मृत्यु से जुड़े संस्कार, शव की तैयारी, उसका दाह संस्कार और दाह संस्कार के बाद की रस्मों का वर्णन करते हैं।
तीसरी पुस्तक का समापन मायामोह के माध्यम से विष्णु की कथा से होता है, जिसमें वे देवताओं को असुरों पर विजय दिलाने में सहायता करते हैं, तथा असुरों को वेदों का खंडन करने वाले विधर्मी सिद्धांतों की शिक्षा देते हैं, जो वेदों के प्रति अपनी अवमानना की घोषणा करते हैं, जिससे उन्हें पहचानना और पराजित करना आसान हो जाता है।

अंश 4: वंशरू राजवंश

पुणस का वामन पहलू, सूर्य वंश और चंद्र वंश का जन्म, दक्ष, पुरुरवा, इक्ष्वाकु, ककुत्स्थ, सगर, विश्वामित्र, कुशध्वज वंश, धन्वंतरि, नहुष, ययाति, यदुवंश, क्रोष्टु वंश आदि की कहानियाँ

पाठ की चौथी पुस्तक, 24 लंबे अध्यायों में, ब्रह्मा से शुरू होने वाले पौराणिक शाही राजवंशों को प्रस्तुत करती है, उसके बाद सौर और चंद्र राजवंश, फिर युगों (युगों) में पृथ्वी पर रहने वाले राजवंश, जिसमें परीक्षित को ष्वर्तमान राजाष कहा जाता है। पाठ में शौभरी, मंधात्री, नर्मदा, ऋषि कपिला, राम, निमि, जनक, बुद्ध, सत्यवती, पुरु, यदु, कृष्ण, देवक, पांडु, कुरु, भरत, भीष्म और अन्य जैसे कई पौराणिक पात्रों की किंवदंतियाँ शामिल हैं।

अंश 5: –". कृष्णा

इस अंस में श्री कृष्ण के जन्म से लेकर निर्याण तक की कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है, जो कई बार भागवत पुराण में वर्णित कथाओं से भी अधिक प्रभावशाली है। विष्णु पुराण की पांचवीं पुस्तक सबसे लंबी है, जिसमें 38 अध्याय हैं। यह भगवान कृष्ण की कथा को समर्पित है, जो भगवान विष्णु के अवतार हैं। पुस्तक की शुरुआत कृष्ण के जन्म, उनके बचपन की शरारतों और लीलाओं, उनके कारनामों, मथुरा के राक्षस–अत्याचारी राजा कंस के अत्याचार को समाप्त करने के उनके उद्देश्य से होती है।
विष्णु पुराण में कृष्ण की कथा भागवत पुराण, कई अन्य पुराणों और महाभारत के हरिवंश में वर्णित उनकी कथा के समान है। विद्वानों ने लंबे समय से इस बात पर बहस की है कि क्या भागवत पुराण ने विष्णु पुराण में कृष्ण की कथा का विस्तार किया है, या क्या बाद वाले ने पहले वाले संस्करण को संक्षिप्त किया है, या दोनों ही हरिवंश पर निर्भर हैं, जिसके बारे में अनुमान है कि इसे आम युग की पहली सहस्राब्दी में कभी लिखा गया था।

अंश 6: मोक्ष दृ मुक्ति

कलियुग का वर्णन, चार प्रकार के प्रलय और अन्य विवरण दिए गए हैं। पाठ के अंतिम अध्याय 6-6 से 6-7 तक विष्णु भक्ति के साधन के रूप में योग और ध्यान पर चर्चा की गई है। पाठ में कहा गया है कि चिंतनशील भक्ति ब्रह्म (परम आत्मा, परम वास्तविकता) के साथ मिलन है, जो केवल करुणा, सत्य, ईमानदारी, निस्वार्थता, आत्म–संयम और पवित्र अध्ययन जैसे गुणों से ही प्राप्त किया जा सकता है। पाठ में पाँच यम, पाँच नियम, प्राणायाम और प्रत्याहार का उल्लेख है। पाठ में कहा गया है कि शुद्ध और परिपूर्ण आत्मा को विष्णु कहा जाता है, और विष्णु में लीन होना मुक्ति है।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

पुराणों का सांस्कृतिक महत्त्व

पुराणों ने प्रायः दो सहस्र वर्षों से भारतीय जन–जीवन को बहुत प्रभावित किया गया है, औपचारिक शिक्षा से वञ्चित जनता में पारम्परिक ज्ञान का वितरण किया है, उसे नैतिक दृष्टि से आदर्शोन्मुख बनाकर भारतीय राष्ट्र के लिए समर्पण भावना में निरत बनाया है तथा आस्तिकवाद की व्यवस्था में रखकर सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँध रखा है। पुराणों का धार्मिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक, नैतिक आदि दृष्टियों से इतना महत्त्व है, जितना किसी साहित्य का नहीं हो सकता। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार किया जाता है। ज्भ्म् च्व्व्स्भ्रै

पुराणों की सर्वोपरि महत्ता आस्तिकवाद के समर्थन के कारण है। उनमें अनेक देवताओं का वर्णन है। सभी देवताओं की समानता की घोषणा करने पर भी एक देवता की महत्ता दिखाना सभी पुराणों का लक्ष्य रहा है। विशेष रूप से ब्रह्म, विष्णु, शिव, गणेश तथा सूर्य की उपासना पद्धतियों का प्रमाणिक बोध पुराणों से होता है। इन्हीं के आधार पर परवर्ती कर्मकाण्ड ग्रन्थों का विकास हुआ है। विन्टरनित्स का कथन है कि धर्म के इतिहास की दृष्टि से वे अमूल्य है और केवल इसी दृष्टि से उनका अध्ययन होना चाहिए, जो आज तक नहीं हो सका है। ये पुराण हिन्दु संस्कृति के लिये सभी अ[3]्गों और स्तरों का पुराण–कथाओं, मूर्तिपूजा, सेर्वेश्वररवाद और एकेश्वरवाद, ईश्वर भक्ति, दर्शन और पूर्वाग्रह, उत्सव और त्योहार, तथा आचार का किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा हमें कहीं अधिक गहन ज्ञान प्रदान करते हैं। हिन्दु संस्कृति की सर्वाधिक स्पष्ट रूपरेखा पुराणों में अ्कित है। सनातन धर्म पुराणों को वेदों से बढ़कर महत्त्व देता है। नारदपुराण में (उत्तर. 24/17) इन्हें वेदों से अधिक प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि वेद अपने प्रचार और व्याख्या के लिए पुराणों पर आश्रित हैं–

वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।
वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणे नात्र संशयः ।।

उपसंहार

हिंदू पवित्र साहित्य में यज्ञ की अवधारणा के बारे में बहुत कुछ है, पवित्र साहित्य में से एक है वराह पुराण। वराह पुराण भगवान विष्णु को इस दुनिया के निर्माता और उद्धारकर्ता के रूप में सर्वोच्च देवता के रूप में महिमामंडित करने वाला एक प्रकार का पुराण है। इस ग्रंथ में भगवान विष्णु जंगली सूअर के रूप में अवतरित हुए हैं। यह पवित्र ग्रंथ पृथ्वी (पृथ्वी) से लेकर जंगली सूअर तक के विभिन्न प्रश्नों को बताता है कि किसने पृथ्वी को विनाश से बचाया, संरक्षित किया, मरम्मत की और उसे बनाए रखा। जंगली सूअर के रूप में भगवान विष्णु की हर प्रस्तुति में विभिन्न प्रकार की यज्ञ अवधारणाएँ हैं। हर प्रक्रिया में जो यज्ञ किया जाता है वह न केवल भौतिक होता है बल्कि अभौतिक या आध्यात्मिक भी होता है। यज्ञ हमेशा ईमानदारी की अवधारणा के आधार पर किया जाता है, भले ही कोई व्यक्ति भौतिक रूप से यज्ञ न कर सके, लेकिन कोई इसे अन्य तरीकों से कर रहा है जैसे घायल जानवरों की मदद करना, प्रार्थना करना या केवल हाथ की परिधि से भगवान की पूजा करना। वराह पुराण में भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के तरीके के बारे में बताया गया है, जिसमें धन की बर्बादी किए बिना प्रार्थना और साधारण प्रसाद ही काफी है।

संदर्भ

1. अग्नि पुराण––पंचानन तर्करत्न द्वारा संपादित तथा वंगवासी प्रेस, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित।
2. अहिर्बुध्न्य संहिता––एम.डी.रामानुजाचार्य द्वारा संपादित। अड्यार, मद्रास, 1916।
3. ऐतरेय ब्राह्मण––आनंदाश्रम संस्कृत श्रृंखला, पूना, 1896।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

4. अमरसिंह का अमरकोश,—वी.झलाकिकर द्वारा संपादित, बॉम्बे, 1907
5. कौटिल्य का अर्थशास्त्र——आर.शर्मा शास्त्री द्वारा संपादित। मैसूर, 1924।
6. आर.रोथ तथा डब्ल्यू.डी.व्हिटनी द्वारा संपादित हर्व वेद। बर्लिन, 1924- —
7. भगवद्गीता, शंकर, माधव और अन्य की टिप्पणियों के साथ, गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, बीपीएमबीवाई, 1908 द्वारा प्रकाशित। प्रेस
8. भागवत पुराण, वंगावासी, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, 1315 बी.एस.
9. ब्रह्मांड पुराण——वेरिकेटेश्वर प्रेस, बॉम्बे ब्रह्म पुराण—वंगावासी प्रेस, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, 1316 बी.एस.
10. सी शिवमूर्ति रू विष्णुधर्मोत्तर चित्रसूत्र, पृष्ठ १६६
11. भागवत महापुराणम भाग ८ और ५, गीता प्रेस, गोरखपुर
12. विष्णु महापुराणम, गीता प्रेस, गोरखपुर
13. अष्टादश पुराण दर्पण, नाग प्रकाशक, नई दिल्ली
14. संस्कृत साहित्य का सर्वेक्षण, सी. कुन्हन राजा, भारतीय विद्या भवन, मुंबई
15. संस्कृतसाहित्यतिहास, आचार्य रामचंद्र मिश्रा, चौखंबा, वाराणसी, 2003-

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com